(3)

भारतीय गैर न्यायिक

Rs 20000 रु

बीस हज़ार रुपये

RUPEES

20000

रुपये

INDIA NON JUDICIAL

00CC 053643







:: विक्रय पत्र ::

मैं, गोगाराम तेली पुत्र श्री बन्सीधर तेली जाति तेली निवासी मकान नम्बर 2583 तेलीपाड़ा, चौड़ा रास्ता, जयपुर राजस्थान का हूँ।

जो कि मेरी अचल सम्पत्ति की एक निर्मित दरोबस्त दुकान नम्बर-।। जयपुर नगर चौकड़ी हवाली शहर की योजना जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर की कार्मिशियल काम्पलैक्स (मार्केट) पन्नेह सिंह की धर्मशाला राजपूताना शैरेटन होटल के सामने,

Internal

4382

वासुदेव शर्मा S/o स्व. श्री भगराज शर्मा

द्वारा गोविन्द भवन, स्वागतम, 2 इंडिस्ट एरिया के सामने, स्टेशन रोड़,

बे.मा.- 24500/-



SA + MV

20,000/- + 4500/- = 24500/-

शनिवार 19-12-98

4.00 योगीराम

3.00 48 तेली

ब्र बशीर व्यापार 2583 तेलीवाड़ा चौड़ा रास्ता

जयपुर

1832/50

3500

85-

15-

75-

19.12.98 3675-

पंजीयन-विभाग
SUB-REGISTRAR, JAIPUR-IInd

स्टेशन रोड़,जयपुर में पूर्व देखता स्थित है। जिसका पूरा विवरण नापो व चारो सीमाओ सहित इस विक्रय पत्र के अन्त में लिखा गया है। उक्त दरोबस्त दुकान संख्या-।। सम्पूर्ण बिनाछत के मुझको कार्यालय जयपुर विकास प्राधिकरण,जयपुर द्वारा जरिये आंवटन पत्र दिनांक 27.1.94 पत्र नम्बर 3315 द्वारा आंवटित की गई थी,जिसकी तमाम नजराना की राशि मेरे द्वारा कार्यालय जयपुर विकास प्राधिकरण,जयपुर में जमा कराकर कब्जा उक्त निर्मित दरोबस्त दुकान का वास्तविक रूप से प्राप्त करके तमाम लीज इत्यादि की राशि की अदायगी करके लीज डीड कार्यालय जयपुर विकास प्राधिकरण,जयपुर से प्राप्त करके नियमानुसार लीज डीड को समक्ष उप पंजीयक कार्यालय,जयपुर में उपस्थित होकर पंजीकृत कराया हुआ है। जिसका विक्रय पत्र क्रमांक982 दिनांक 30 नवम्बर सन् 1998 ईस्वी की नकल उप पंजीयक कार्यालय,जयपुर की पुस्तक संख्या-। के भाग 169 पृष्ठ संख्या-100 पर क्रमांक 5800 दिनांक 1.12.1998 को पंजीकृत किया हुआ है। इस प्रकार मैं अपने उक्त अलाट शुदा निर्मित दरोबस्त दुकान संख्या-।। का बिना किसी अन्य व्यक्ति के सीर एवं साझे के एक मात्र मालिक व स्वामी हूँ तथा उपयुर्क्त वर्णित अलाट शुदा निर्मित दरोबस्त दुकान मेरी और के प्रत्येक प्रकार के झगड़े,टन्टे,कर्जा,डिग्री,बैंक ऋण आदि के भार सरकारी,अर्द्ध सरकारी,जन साधारण आदि के भार से मुक्त है तथा उपयुर्क्त वर्णित निर्मित दरोबस्त दुकान को मुझे प्रत्येक प्रकार से अपने उपयोग वउपभोग में लेने,लाभ अर्जित करने, रहन,विक्रय,पुन्य,हस्तान्तरित आदि करने के सम्पूर्ण स्वत्वाधिकार मालिकाना हक प्राप्त है।

उक्त अलाट शुदा दुकान में बासुदेव शर्मा पुत्र श्री मगराज शर्मा अर्सेदराज से बैहिसयत किरायेदार 500/-रूपया माहवार के हिसाब से काबिज चले आ रहे है वर्तमान कानून को देखते हुए काबिज किरायेदार से खाली कराने में काफी समय लगने की संभावना को देखते हुए एवं अन्य पारिवारिक आवश्यकताओ की पूर्ति करने

D7/3/12/17

Internal

उक्त श्री गोपाराम ....
वेसपत्र [illegible] को पढ़ सुन व समझ कर
मेरा निष्पादन करना स्वीकार किया।

3,50,000/

[illegible]
दीनदयाल पचार हजार रुपये
25,000/ मात्र

ई.डी.-ए 160993 दि. 16-12-88
मेरे समक्ष प्राप्त किये। को-ऑप बैंक चांदपोल जयपुर
Rs. 3,25,000/-

Vinod Kumar Sharma

उक्त निष्पादन कर्ता की पहचान
(1) श्री कालूराम ....
एवं श्री मूलाराम ....
उम्र 58 वर्ष ....
व्यवसाय व्यापार ....
निवासी नापलदहाड़ा कोतवाली जयपुर
तथा (2) श्री विनोद कुमार शर्मा
पुत्र श्री कांशीराम उम्र उपरोक्त वर्ष
व्यवसाय राजकीय सेवा
निवासी [illegible]
58 प्रताप नगर टोंक रोड जयपुर

उप पंजीयक, जयपुर द्वितीय

Internal

जाति के साक्ष्य देखे

उप-पंजीयक, जयपुर द्वितीय (राज०)
पंजीयन-विभाग
SUB-REGISTRAR-JAIPUR-IInd
.STRAR, JAIPUR-IInd

हेतु रूपयो की आवश्यकता होने के कारण मैने अपना उक्त अलाट शुदा दुकान संख्या-।। सम्पूर्ण स्वत्वो, बाहरी, भीतरी, नीचे ऊपर मय लगे हुए लोहे के शटर फिटिंग बिजली पानी के लाईन कनेक्शन डिपोजिट अलावा छत के अधिकारो सहित बिना रखे किसी अन्य भाग के श्री बासुदेव शर्मा पुत्र श्री मगराज शर्मा जाति ब्राह्मण निवासी गोबिन्द भवन, स्वागतम् टयूरिस्ट बंगला के सामने, सदर थाने के पीछे, स्टेशन रोड़, जयपुर को 3,50,000/-अक्षरे तीन लाख पचास हजार रूपया के बदले अपनी प्रसन्नता से पूर्ण रूप से बिक्रौती कर दिया।

खर्या इस विक्रय पत्र पंजीयन कराने तक का प्रत्येक प्रकार का क्रेता श्री बासुदेव शर्मा के जिम्मे तैय पाया है। तथा क्रेता द्वारा ही मूलधन से पृथक अपने पास से वहन किया है। मूलधन की तैय शुदा राशि 3,50,000/-अक्षरे तीन लाख पचास हजार रूपया में से 4,000/-अक्षरे चार हजार रूपया तो पूर्व में जरिये प्रतिज्ञा पत्र लिखा हुआ दिनांक 16.10.98 को एवं 21000/-रू अक्षरे इक्कीस हजार रूपया का एक चैक नम्बर 442744 यूको बैक ब्रांच चांदपोल बाजार, जयपुर दिनांक 15.10.98 का पूर्व में प्राप्त कर लिये तथा शेष मूलधन की राशि के 3,25,000/-रू अक्षरे तीन लाख पच्चीस हजार रूपया जरिये बैकर्स चैक नम्बर 160993 यूको बैक ब्रांच चांदपोल बाजार जयपुर दिनांक 16.12.98 का इस विक्रय पत्र पंजीयन कराते समय सन्मुख उप पंजीयक महोदय जयपुर के क्रेता श्री बासुदेव शर्मा से प्राप्त कर लिया। इस प्रकार कुल मूलधन की तैय शुदा राशि 3,50,000/-रूपया अक्षरे तीन लाख पचास हजार रूपया क्रेता से उपयुर्क्त वर्णित अनुसार प्राप्त करके कब्जा बिक्रौती की हुई निर्मित दुकान पर क्रेता का जो बैहिसयत किरायेदार के था का वास्तविक रूप से मौके पर करा दिया है। आज से बिक्रौती की हुई दरोबस्त दुकान संख्या-।। के सम्बन्ध में समस्त मालिकाना अधिकार मय असल कागजात सहित जो मुझे आज तक जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर से अलाट होने के दिन से प्राप्त रहे है वह समस्त मालिकाना अधिकार

Internal

Pending Vide Miniute Book
No. 9222 Date 19/12/98

Sub Registrar Jaipur-II

SUB-REGISTRAR

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि इस विक्रय-पत्र
की मालियत रु० 423220 मानते हुए इस
पर देय कमी मुद्रांक राशि रु० 5125 पर
कमी पंजीयन शुल्क रु० 735 कुल
रुपये 5860/- के स्थान पर
संख्या 1836/56 दिनांक 28/12/98
जमा किये गये है।
अतः देय [illegible] 29625/-
मुद्रांकों पर निष्पादित किया जाता है।

उप पंजीयक
पं० मु० जयपुर द्वितीय

Released Vide Miniute Book
No. 10001 Date 20/12/98

Sub Registrar Jaipur-II

6279 I

Registered No. ..... Book No. ....
Volume No. 171 on page 179 to ....
this day of 28/12/1998 and ....
Copy of deed field in Addt. Book No. I 627 to 638
Volume No. 674 at S.No. 29 Pages ....

Sub Registrar
Jaipur-II

Internal

मैने आज ही क्रेता को दे दिये है। अब क्रेता जिस प्रकार चाहे बियौती की हुई दरोबस्त दुकान में अपनी इच्छानुसार रदोबदल कराकर अपने उपयोग व उपभोग में लेने, लाभ अर्जित करने, रहन, विक्रय, पुन्य, हस्तान्तरित आदि करने के सम्पूर्ण मालिकाना अधिकार आज ही क्रेता को दे दिये है। अब इस बियौती की हुई निर्मित दरोबस्त दुकान के इस विक्रय पत्र के विपरित मुझको या मेरे किसी अन्य उत्तराधिकारो को कोई आपत्ति करने का अधिकार नही होगा।

भविष्य में बियौती की हुई निर्मित दरोबस्त दुकान संख्या-।। के इस विक्रय पत्र के विपरित मेरा कोई अन्य साझीदार या भागीदार बनकर किसी प्रकार को आपत्ति आदेश इत्यादि करेगा या आज के पूर्व का कोई झगड़ा, टन्टा, कर्जा, डिग्री, बैक ऋण आदि का गृहकर भूमि एवं भवन कर इत्यादि का बकाया निकलेगा तो उन सब का निपटारा हानि व्यय सहित मैं स्वयं करूगा क्रेता बासुदेव शर्मा से इसका कोई सम्बन्ध नही होगा। उपयुर्क्त वर्णित किसी कारण या मेरे स्वामित्व की त्रूटि के कारण बियौती की हुई निर्मित दरोबस्त दुकान सम्पूर्ण या आंशिक रूप से क्रेता के कब्जे एवं अधिकार से निकल जावें या क्रेता को इस पर मेरा कोई ऋण आदि का भार बकाया निकलेगा तो उन सब का निपटारा हानि व्यय सहित मैं स्वयं करूगा क्रेता श्री बासुदेव शर्मा से इसका कोई सम्बन्ध नही होगा।

बियौती की हुई दुकान का पूरा विवरण

जयपुर नगर चौकड़ी हवाली शहर की योजना फतेह सिंह की धर्मशाला, स्टेशन रोड, जयपुर में एक दुकान संख्या-।। पूर्व देखती जिसकी नाप पूर्व पश्चिम 15 फीट उतर दक्षिण 10 फीट जिसका कुल क्षेत्रफल 13.94 वर्गमीटर होता है। अलावा छत के अधिकारो सहित बियौती की गई है। यानि छत बियौती में शामिल नही है।

उप पंजीयक, जयपुर द्वितीय

बियौती की हुई दुकान की चारो सीमाए

पूर्व में :- रास्ता आमद रफ्त 22 फीट 9 ईंच चौड़ा
प्रस्तावित सरकारी मध्य पुटपाथ सरकारी

Internal



Internal

पश्चिम में :- गली आमद रफ्त 6 फीट चौड़ी सरकारी

उत्तर में :- दुकान संख्या-10 की दीवार मिली हुई।

दक्षिण में :- दुकान संख्या-12 की दीवार मिली हुई।

इस प्रकार मैंने अपनी उक्त निर्मित दरोबस्त दुकान नम्बर क्रेता को बियौती कर दिया है। अब क्रेता जिस प्रकार चाहे इस विक्रय पत्र के माध्यम से समस्त विभाग जो आज तक कायम है व भविष्य में कायम होगे में उपस्थित होकर मेरे नाम की बजाय अपना नाम अंकित कराने का अधिकारी हो गया है। क्रेता को अपना नाम अंकित कराने में मेरे ब्यान, हस्ताक्षर, शपथ पत्र, हल्फीया ब्यान इत्यादि की आवश्यकता पड़ने पर मैं क्रेता का बिना किसी मुआवजे के पूर्ण सहयोग करने हेतु वचन बद्ध हूँ।

उप-पंजीयक, जयपुर द्वितीय (राज.) पंजीयन-विभाग SUB-REGISTRAR JAIPUR-II

बियौती की हुई निर्मित दरोबस्त दुकान नम्बर-11 को इस विक्रय पत्र के साथ संलग्न मानचित्र में पीले रंग से दर्शाया गया है। जो इस विक्रय पत्र का अभिन्न अंग समझा जावेगा। बियौती की हुई दरोबस्त दुकान अविकसित मार्केट में स्थित होने एवं बिना छत के अधिकारो के होने के कारण इसकी बाजारू कीमत मूलधन से अधिक नही है।

बियौती की हुई दुकान को इस विक्रय पत्र की प्रस्तुत शुदा फोटो स्टेट प्रति भविष्य में अस्पष्ट व अपठनीय हो जाने की सूरत में विभाग को कोई जिम्मेदारी नही होगी।

उप-पंजीयक, जयपुर द्वितीय

अतः यह विक्रय पत्र मैंने अपनी राजी खुशी स्वच्छचित तथा स्थिर बुद्धि की अवस्था में 24500/-रूपया के एक मुद्रा पत्र व चार किता पेपरो पर क्रेता श्री बासुदेव शर्मा के हित में लिख दिया है कि प्रमाण रहे और समय पर काम आवें इति दिनांक 19 दिसम्बर सन् 1998 ईस्वी

19/12/98

हस्ताक्षर विक्रेता :-

गुरूचरण सिंह चावला
नीति पत्र लेखक

गवाह

गवाह विनोद कुमार शर्मा पुत्र श्री काशीनाथ शर्मा
68, प्रताप नगर, टोंक रोड़, जयपुर-18

Internal



Internal



Registered No. 6279 Book No. I
Velume No. 171 on page 179 to.....
this day of 28/12/1998 and.....
copy of deed field in Addt. Book No. I
velume No. 674 at S. No. 29 Pages. 627 से 638

Sub Registrar
JAIPUR-II